ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

हिंदी ऑनलाइन कक्षा में आप सभी का स्वागत है|

कक्षा -8

हिन्दी

पाठ -5

गूदड़ साँईं

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) साँईं मोहन के पिता के डाँटने पर भी मोहन के घर क्यों जाता था?

(ख) मोहन के पिता को फकीरों पर विश्वास क्यों नहीं था?

(ग) साँईं बच्चों के पीछे चिथड़ों को लेकर क्यों भागता था?

(घ) साँईं बच्चे के गले में गलबाहीं डालकर क्यों निकल पड़ा?

(क) मोहन को उसके पिता साँईं के पास जाने से रोकते थे। उन्हें फ़कीरों से स्वाभाविक चिढ़ थी। वे चाहते थे कि मोहन ऐसे लोगों से दूर रहे, पर इतना सब होते हुए भी साँईं मोहन के घर जाता था क्योंकि मोहन को उससे बहुत लगाव था तथा वह पिता की नज़र बचाकर, तथा माँ से ज़िद करके उसे रोटियाँ भी देता था।

(ख) मोहन के पिता को फ़कीरों पर विश्वास नहीं था, क्योंकि वे पाश्चात्य शिक्षा और सभ्यता से प्रभावित थे। उनका मानना था कि सभी फ़कीर ढोंगी होते हैं। जहाँ तक मुझे लगता है, सभी का स्वभाव एक जैसा नहीं है। कुछ अच्छे होते हैं तो कुछ बुरे। ऐसी स्थिति में बिना सोचे-समझे किसी पर विश्वास नहीं करना चाहिए परंतु यह नहीं मान लेना चाहिए कि सभी एक ही तरह के होते हैं।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

(ग) साँईं बच्चों के चिथड़े लेकर इसलिए भागता है कि वह बच्चों को भगवान समझता है और बच्चे जब उसके पीछे भागते हैं तो उसे ऐसा लगता है जैसे भगवान ही आ रहे हों।

(घ) बच्चे के गले में गलबहियाँ डालकर साँईं इसलिए चल पड़ा कि वह बच्चों से बहुत प्यार करता था। वह किसी भी दशा में स्वयं को बच्चों से अलग नहीं कर पाता था। वह उनमें भगवान का रूप देखता था। यही कारण था कि मोहन के पिता ने जब बच्चे को पीटा और बच्चा रोने लगा तो साँईं भी रोने लगे और कहने लगे कि चिथड़ों पर तो भगवान ही दया करते हैं। इतना कहते वह बालक का मुँह पोंछते हुए उसके साथ चल पड़े।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

6.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए-

क) साँईं गूदड़ क्यों रखता था?

साँईं एक सिधा साधा फकीर था। उसके पास दो तीन गूदड़ था।उसी गूदड़ से वह बच्चों को अपने ओर आकर्षित करता था।वह बच्चों को भगवान का अवतार मानता था और इस गूदड़ से वह बच्चों का मनविनोद करता।

ख) लेखक ने कहानी का शीर्षक'गूदड़ साँईं'क्यों रखा है?अपने विचार लिखिए।

लेखक के कहानी का शीर्षक गूदड़ साँईं रखने के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं–

(*i*) वह हमेशा अपने साथ दो-तीन चिथड़े रखता था।

(*ii*) बच्चे जब चिथड़े खींचकर भागते थे वह नाराज़ नहीं बल्कि खुश होते थे।

(*iii*) बच्चों को वह भगवान का ही रूप मानते थे।

(*iv*) उनका स्वभाव सरल था। उनके अंदर किसी प्रकार के माया-मोह की भावना नहीं थी।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow